جون ۲۰۱۳ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبارَکَ وَتَعَالیٰ قَدْ جَاءَ کُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَکِتَابٌ مُبِيْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب





نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیۂ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

PUBLISHED ON 4TH SUNDAY OF EVERY MONTH
R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2011-13 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

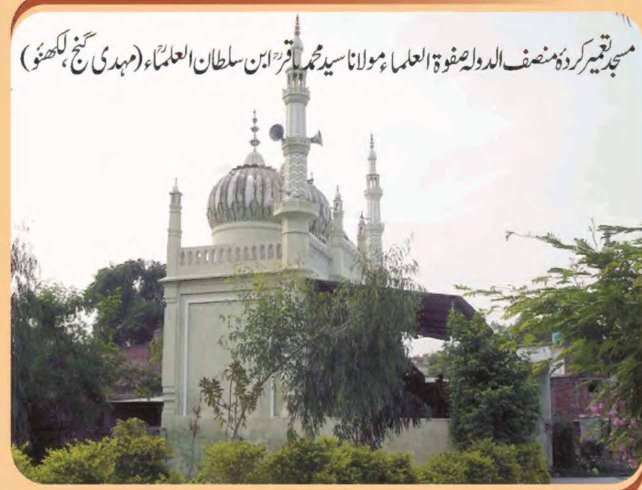
SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

June 2013



مسجد تعمیر کردۂ منصف الدولہ صفوۃ العلماء مولانا سید محمد باقرؒ ابن سلطان العلماءؒ (مہدی گنج، لکھنؤ)



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

सम्पादन समिति

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

▼▼▼

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

●●●

WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com
E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

विषय सूची

जून 2013ई०

रजबुल मुरज्जब 1434हि०

ज़िन्दगी का सिस्टम

y§kd %आयतुल्लाहिल उज़मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी

क़िस्त : 13 lEiknu %नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

दूसरी चीज़ जो उसकी आंखों के सामने है वह ख़ुदा की पैदा की हुई एक नेमत 'पानी' है। वह देखता है कि इस पानी का इन्सान की ज़िन्दगी के सिस्टम में कितना लेना देना है, और कितने फ़ायदे इससे जुड़े हैं। ख़ुदा ने इस पानी को ज़्यादा बहुतात से पैदा किया है और इन्सान को सुख पहुँचाने के लिए इसको पाक और पाक करने वाला बनाया है । इसकी वह ख़ासियत है जो इस्लामी शरीयत में किसी दूसरी चीज़ के लिए नहीं मिलती। इसकी वजह से इन्सान को बहुत आसानी पैदा होती है। अब इन्सान दोनों मिली–जुली हालतों के साथ एक तरफ़ उस काम का एहसास जिसे वह करता है जिसमें ख़ुदा की मदद की ज़रूरत है, और दूसरी तरफ़ उस नेमत यानि पानी के ध्यान से जो उसके सामने है और जो उसके फ़ायदे और बरकतें मौजूद हैं, वह कहता है – 'बिस्मिल्लाहि व बिल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ज'अललमा–अ तहूरा वलम यज्–अल्हु नजिसा' (ख़ुदा की मदद से और ख़ुदा के सहारे से इबादत भक्ति में आगे बढ़ता हूँ सिर्फ़ उसकी तौफ़ीक़ के भरोसे पर । फिर कहता है कि हम्द संस्तुति (तमाम तारीफ़ें) हैं ख़ुदा के लिए जिसने 'पानी को पाक और पाक करने वाला पैदा किया और इसको नजिस नहीं बनाया।''

(2) वज़ू में कुल्ली करना मुस्तहब (अच्छा) है, अब कुल्ली में होता क्या है? पानी मुँह के अन्दर हिलता है। अब इन्सान का दिमाग़ उस ओर जाता है कि मेरे मुँह से किन चीज़ों का लगाव है, मुँह से जिस चीज़ का सबसे ज़्यादा लगाव है वह बोलना (बात करना) है, मगर दुनिया में इन्सान कितना ही बोलने की सकत रखने वाला और ज़बान वाला हो, क्या फ़ायदा है? अगर ये ज़बान ईश्वर के आगे जवाब न दे सके और सवाल के मौक़े पर गूँगी हो जाए। क़ुर्आने मजीद में क़यामत (प्रलय) के दिन के बारे में बताया गया है कि – ''कोई उस दिन बात न कर सकेगा, मगर ख़ुदा की इजाज़त से'' और दूसरी जगह साफ़ कहा गया है ''बेकहे, (Dis-obedient) लोगों को कोई इजाज़त न होगी कि वह बहाना (Excuse) कर सकें।

ज़बान उस दिन चुप है, इसलिए कोई हुज्जत (प्रमाण) ही पास में नहीं है। मगर उस दिन ज़बान का खुला होना दुनिया में इस ज़बान के सही तरीक़े से चलने से जुड़ा है क्योंकि वहां की जज़ा (इनाम) और सज़ा यहाँ के कर्म (अच्छे और बुरे काम) के हिसाब से है। ये ज़बान दुनिया में ज़िक्रे–इलाही (ख़ुदा की याद में) लगी रहे, ख़ुदा की याद से न झपके, सच बातों के कहने में कमी न करे। फिर ये इन्सान के लिए एक सफल ज़बान है। इसलिए बन्दा ख़ुदा से इन बातों का सवाल करता है और कहता है –''ऐ ख़ुदा ! मुझे हुज्जत प्रदान कर यानि मुझे अपने सामने जवाब देने' की सकत दे, जिस दिन मैं तेरे सामने हाज़िर हुँ और मेरी ज़बान को चालू रख अपने ज़िक्र अपनी याद के साथ।

(2) फिर नाक में पानी डालने का हुक्म है, उस वक़्त सूँघने की तरफ़ ध्यान होता है। यहाँ दुनिया में हज़ारों तरह के फूलों की ख़ुशबू का आनन्द होता है, और अच्छी क़िस्म के इत्र और

सेन्ट (Scent) को सूँघ कर इन्सान को खुशी महसूस होती है। लेकिन क़यामत के दिन अगर जन्नत की खुशबू सूँघने से ये नाक रोक दी गयी तो यहाँ के सारे मज़े बेकार हैं। क्योंकि बहुत से गुनाहों के लिए हदीसों में ये बयान है कि जो इन्हें करेगा, वह जन्नत की ख़ुशबू तक ना सूँघ सकेगा। ये जन्नत से वन्चित होने की आख़िरी हद है, इसीलिए भगवान से ये अर्ज़ किया जाता है –"ऐ अल्लाह ! मेरे ऊपर जन्नत की ख़ुशबू को हराम (निषेध) न करना और मुझे उन लोगों में ठहराना जो इसकी ख़ुशबू और मज़े को उठाने वाले होगें।"

इसका पहला हिस्सा आख़िरत (परलोक) से जुड़ा है और दूसरा हिस्सा यानि "मुझे उन लोगों में न ठहराना जिनके साथ ये बर्ताव होगा", इसका सम्बन्ध दुनिया से है यानि अपने कर्म से मैं उन लोगों में न गिना जाऊँ जो अपने कुकर्मों के कारण से जन्नत की खुशबू से दूर होगें।

इसके बाद चेहरे पर पानी डालेगा। ये वज़ू का पहला वाजिब (अनिवार्य) हिस्सा है। उस वक़्त चेहरे की धूल वग़ैरह दूर होती है और चेहरा साफ़ होता है। मगर उस समय याद आना चाहिए कि क़यामत के दिन दो तरह के लोग होंगे : "कुछ वह होंगे जिनके चेहरे साफ़ उजले और नूरानी हैं, "और कुछ चेहरों पर हवाईयाँ उड़ रही होंगी और कालिख दौड़ी हुई होगी ।

एक जगह कहा गया है – "जिन लोगों के चहरे उजले नूरानी होंगे (क़यामत के दिन) वे खुदा की दया /रहमत में होंगे।"

इस भेद को देखते हुए चेहरा धोते वक़्त दुआ़ की जाती है – "ऐ खुदा ! मेरे चेहरे को उस दिन उजला रखना जिस दिन बहुत से चेहरे काले होंगे और मेरे चेहरे को उस दिन काला न करना जब बहुत से चेहरे उजले होंगे।"

5. फिर दाहिने हाथ को धोना है। इस जगह क्रम/तरतीब यानि पहले दाहिना फिर बायां हाथ) ज़रूरी है इसलिए दाहिने की ख़ास बात ज़रूर सामने आएगी और ये फ़र्क़ कि क़यामत के दिन कुछ लोगों को दाहिने हाथ में ना–म–ए–आमाल (कर्म पत्र) दिया जाएगा, ये अच्छे कर्म वाले लोग होंगे और कुछ को बाएँ हाथ में, ये बुरे कर्म वाले लोग होंगे।

इसलिए ये दुआ़ करेगा– "ऐ ख़ुदा ! मेरा आमाल–नामा मेरे दाहिने हाथ में न प्रदान करना और जन्नत की सदा रहने वाली ज़िन्दगी पाने को मेरे लिए आसान कर देना और मुझसे बहुत कम हिसाब करना।"

6. फिर बाएँ हाथ को धोते वक़्त ये दुआ़ –"ऐ ख़ुदा ! मेरे आमाल नामे को मेरे बाएँ हाथ में न प्रदान करना और इन हाथों को मेरी गर्दन की तरफ़ बंधा हुआ न रखना और मैं तुझसे पनाह माँगता हूँ, आग की हथकड़ियों से।"

हाथों का गर्दन की तरफ़ बंधा होना कर्म में कमी का एक इशारा है,

7. फिर सर का मसह (गीला हाथ फेरना) है, उस वक़्त ये दुआ पढ़ें –"ऐ ख़ुदा ! मुझे उढ़ा दे अपनी रहमत और बरकत बढ़ोत्तरी और माफ़ी ।"

8. फिर पैरों का मसह। उस वक़्त ये दुआ़ पढ़े।

"इन्सान जब इस दुनिया में कर्म और कर्तव्य के रास्ते पर सही तरीक़े से चलेगा तो ऐसे में 'सिरात' यानि जन्नत में जाने का रास्ता आसानी से पार कर लेगा। ये इन्सान के फ़र्ज़/कर्त्तव्य की नज़ाकत (सूक्ष्मता/Fineness) ही है जिसके लेहाज़ से कहा गया है कि सिरात बाल से ज़्यादा महीन और तलवार से ज़्यादा तेज़ है। उस वक़्त उस पर अडिग रहना खुदा की तौफ़ीक़ (मदद) और इन्सान के जतन के साथ जुड़ा हुआ है।

i kpokav/;k;

uekt +

यह इस्लाम का वह फ़रीज़ा (फ़र्ज़/कर्त्तव्य) है जिसे धर्म का स्तम्भ (Pillar) यानि मज़हब का खम्भा कहा गया है। अगर ग़ौर करें तो दुनिया

के सारे मज़हब में आपको इबादत/भक्ति का कोई न कोई तरीक़ा मिलेगा। मगर हर इबादत के तरीक़े में कोई 'एक' ख़ास हैसियत (Position) होती है। कहीं मुनाजात व दुआ़ है और कहीं कुछ ख़ास तरह के काम हैं, और हिलना, डुलना, उठना बैठना कहीं सिर्फ़ ठहराव (ध्यान–मग्न) और सोच को इबादत कहा गया है। मगर इबादत का कोई तरीक़ा इतना सर्वांगीण (Comprehensive), सर्वत्र और पूरा (Perfect) नहीं है जितना इस्लाम की इबादत का तरीक़ा नमाज़ है।

इसमें आत्मा भी साथ है और जिस्म भी, ज़बान से भी याद है और कर्म से भी। बोल से ख़ुदा की तारीफ़ भी और तस्बीह भी, मुनाजात भी है और दुआ भी, और अ़मल में झुकने और मानहीनता दिखाने के जितने भी दर्जे होते हैं , वे सब मौजूद हैं। अदब के साथ खड़े होना और फिर आधे धड़ से झुकना और आख़िर में माथे का धरती पर रख देना। एक ज़िन्दा मज़हब के लिए इस तरह का तरीक़ा होना ज़रूरी है जो ख़ुदा की उपासना का एहसास, भक्तिभाव पैदा करता रहे।

यूँ तो हर कोई जिस मां–बाप के घर में पैदा हुआ है, उन्हीं के मज़हब को अपना मज़हब कहता है, मगर ये उसी हद तक है कि जब कोई पूछे कि तुम्हारा मज़हब क्या है तो वह सिर्फ़ कह दे कि मेरा मज़हब ये है, मगर उसका ध्यान और ख़्याल रहना ज़रूरी नहीं।

अब ज़ाहिर है कि विश्वास का असर इन्सान पर उतना ही ज़्यादा पड़ सकता है, जितना ज़्यादा वह इन्सान के सामने रहे।

मज़हब की अस्ल सिद्धान्त अध्यात्मिकता /रूहानियत की जड़ ख़ुदा का विश्वास होना है। इन्सान अपने ख़ुदा को याद रखेगा तो उसे एहसास पैदा होगा कि मुझमें कौन सी बातें होना चाहिए, कौन सा काम करूँ जिससे ख़ुदा ख़ुश हो और कौन सा काम न करूँ ताकि ख़ुदा नाराज़ न हो। दूसरी चीज़ 'आख़िरत (परलोक) की याद' है, इसका भी असर इन्सान के कामों और कर्म पर पड़ता है।

वह इन्सान अपने कर्त्तव्य की अनदेखी कर देता है जो दुनिया के सुख चैन में पड़ कर आख़िरत का ख़्याल दिल में नहीं लाता। मगर ख़ुदा के वह बन्दे जिनके मन में सदा ये बात रहती है कि हमको यहां के बाद एक दूसरी दुनियां देखना है, जहाँ कर्म का हिसाब होगा, और अच्छे और बुरे कामों का बदला दिया जाएगा, वह कभी अपनी चाहतों और लालच के बहाव में आगे नहीं बढ़ते। मानने, विश्वास, सोच मन के लेहाज़ से ये दोनों विश्वास इन्सान के सुधार के लिए काफ़ी हैं।, यानि इन दोनों विश्वासों के बाद हर कोई को यह ख़याल पैदा हो सकता है कि मुझे ऐसे काम करने चाहिए जिनसे ख़ुदा ख़ुश हो और आख़िरत में मुझे सज़ा न मिले।

मगर काम के करने के लेहाज़ से जब तक कोई बताने वाला न हो कि वह कौन से रास्ते हैं जिनसे ख़ुदा राज़ी होगा और जिनसे आख़िरत में सफ़लता मिल सकती है, उस वक़्त तक इन दोनों विश्वासों का फ़ायदा बन नहीं सकता।

वह रसूल (स0) होता है जो ख़ुदा और बन्दे के बीच लगाव और सम्पर्क बनाता है। रसूल (स0) की शिक्षाएं उनके काल के लोगों को तो सीधे मिलती थी। अगर आप (स0) के बाद आप की याद दिलों में बाक़ी न रहे तो आपके होने की बरकतें बाद की पीढ़ियों तक नहीं पहुँच सकतीं।

इसलिए ज़रूरत है कि आप (स0) की भी याद बाक़ी रहे ताकि आप (स0) की शिक्षाएं और आप (स0) के चरित्र से बाद की पीढ़ियां उसी तरह फ़ायदा उठाएँ जिस तरह आप के समय के लोग आप (स0) से फ़ायदा उठाते थे।

ये तीनों चीज़ें ऐसी हैं जिनमें इस्लामी नज़रिए से किसी अलगाव की कोई जगह नहीं है। यानि सभी फ़िरक़ो गुटों में इस पर एका हैं कि ये इस्लाम के मूल विश्वास हैं। इस्लाम का सबसे

अहम फ़र्ज, 'नमाज़', इन तीनों चीज़ों की याद बाक़ी रखने का ज़रिया है। सिरजनहार की याद, आख़िरत/परलोक की याद और रसूल (स0) की याद सब इसी कारण मुसलमानों के दिलों में ताज़ा होती रहती है।

हमारे नज़दीक रसूल (स0) ने अपने बाद के लिए भी कुछ लोग छोड़े थे। जिनके चाल चलन और कर्म अल्लाह की शिक्षाओं के आइने थे। उनकी याद बाक़ी रखने में रसूल (स0) ने बड़ा एहतेमाम किया था। वह रसूल(स0) के अहलेबैत (अ0) थे, हमारे नज़दीक नमाज़ में उनकी याद भी बाक़ी रखी गई है। और वह तशहहुद के बाद सलवात है, जिसमें उनका ब्यान होता है। और हम नहीं बल्कि इमाम शाफ़ई भी इसको नमाज़ का हिस्सा समझते हैं और अहलेबैत (अ0) के ज़िर्क के बिना नमाज़ को ग़लत ठहराते हैं।

उनका ये शेर मशहूर हैः– '' आपके लिए ऐ रसूल (स0) के अहलेबैत (अ0) ये फ़ज़ीलत श्रेष्ठता बहुत काफ़ी है कि जो आप पर सलवात न भेजे उसकी नमाज़ स्वीकार होने के क़ाबिल नहीं।''

याद रखिए कि रसूल (स0) के अहलेबैत (अ0) की याद बाक़ी रखने से खुद उनका कोई फ़ायदा नहीं है, उन्हें तो अपनी ज़ाहिरी ज़िन्दगी से खुद को कब फ़ायदा पहुँचा, बल्कि उन्हें तो पत्थर खाने पड़े, कूड़ा फेंके जाने का अपमान सहना पड़ा और वह दुःख उठाना पड़े कि खुद फ़रमाया–''किसी नबी (खुदा के संदेशक) को वह दुःख नहीं पहुँचाए गए, जो मुझको पहुँचाए गये।''

उनकी वह सेवाएं और शिक्षाएं जो ज़िन्दगी भर उन्होंने दीं उससे ख़ुदा के बन्दों/दासों को फ़ायदा पहुँचा और इसी तरह उनकी याद बाक़ी रहने से भी ख़ुदा के बन्दों ही को फ़ायदा पहुँच सकता है।

यह इस्लाम का हुक्म नमाज़ ही है जो उनकी याद बाक़ी रखने का माध्यम है और एक बार नहीं बल्कि कम से कम दिन में पाँच बार, इसे कोई मामूली बात न समझिए।

किसी फ़ारसी कवि ने कहा है कि ''लगातार बारिश की बूंदें जब पत्थर पर गिरती हैं तो उस पर भी निशान बन जाता है। बारिश के बूंद की हस्ती को देखिए और पत्थर के ऐसे कठोर पिण्ड जिस्म को, मगर लगातार बराबर चोट से वह पत्थर पर अपना असर पैदा कर देती है। फ़िर उनकी लगातार याद जो नमाज़ के ज़रिए होती है, क्या वह ख़ाली जा सकती है?

पत्थर जैसा सख़्त दिल भी हो तो भी हो सकता है कि कभी न कभी ज़रूर उस पर असर हो जाए।

नमाज़ के इन मक़सद को मासूम इमामों (अ0) ने हदीसों में ज़ाहिर किया है।

मुहम्मद बिन सनान का पत्र है, इमाम रज़ा (अ0) की सेवा में कुछ मसले पूछे हैं, जिनमें नमाज़ की मसलहत या दर्शन का भी सवाल है।

हज़रत (अ0) ने जवाब में लिखाः–

'' नमाज़ की मसलहत ये है कि इसमें ख़ुदा वन्दे आलम की ख़ुदाई का एक़रार है और ख़ुदा के अन्य (ख़ुदा के अलावा तमाम चीज़ों) से अलगाव ज़ाहिर किया गया है और परमेश्वर ख़ुदा के आगे (अपने को) बेबस, हीन, गिरा पड़ा (मानकर) खड़ा होना है, और अपने गुनाहों को मान कर और पिछले गुनाहों की माफ़ी की दरख़ास्त है और ख़ुदा की महानता के आगे चेहरे का ज़मीन पर हर दिन रखना है।

ये है मेरे बयान का पहला हिस्सा जिसमें मैने साबित किया था कि भक्ति इबादत के जितने तरीक़े हैं वह किस तरह सर्वांगीणना के साथ नमाज़ में होते हैं।

इसके बाद इमाम (अ0) फ़रमाते हैं कि इस नमाज़ के ज़रिए से इन्सान को याद बाक़ी रहती है और वह भूलने नहीं पाता और न (अपने में) उड़ पाता है और वह सदा ख़ुदा के सामने सर झुकाए नीच और मग्न रहता है और उससे दीन

व दुनिया में, बढ़ोत्तरी मांगता है। नमाज़ के ज़रिए से रात–दिन हर वक़्त बन्दे को ख़ुदा की याद करना ज़रूरी हो जाता है ताकि बन्दा अपने मालिक और सिरजनहार को भूल न जाए और सरफिरा न हो जाए और सर न उठाए, और यह कि अपने ख़ुदा को याद करने और उसके सामने होने के एहसास से वह गुनाहों से दूर रहेगा और बहुत से नुक़सानों से बचा रहेगा।

इसमें नमाज़ को ख़ुदा की याद का ज़रिया बताया गया है, जो सारे विश्वासों का शीर्षक और अस्ल आधार है।

दूसरी रवायत हश्शाम बिन अलहकम की है कि मैने इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) से नमाज़ का कारण पूछा, जब कि इससे लोगों की (दूसरी) ज़रूरतों का नुक़्सान होता है और शरीर को दुःख भी होता है। इमाम (अ0) ने फ़रमायाः

''नमाज़ में बहुत सी मसलहतें है।, अगर लोगों को बग़ैर चेतावनी और रसूल (स0) की याद के छोड़ दिया जाता तो (जानते हो) क्या होता ? ''

मुसलमान भी पहली उम्मतों (समुदायों) की तरह हो जाते जिन्होंने एक धर्म बना लिया और (नई) किताबें गढ़ डालीं और लोगों को अपने तरीक़ों का न्योता दिया और लोग उस पर चले। उसका नतीजा ये हुआ कि उन पिछले नबियों की शिक्षा मिट गयी और वह खुद उनके जीवन के साथ विदा हो गयी।

ख़ुदा ने यह चाहा कि मुसल्मानों को हज़रत मोहम्मद (स0) की शिक्षा भूलने न पाए इसलिए नमाज़ का फ़र्ज़/कर्त्तव्य लागू किया जिसमें रोज़ाना पाँच बार ये रसूल (स0) को याद कर लेते हैं और उनके नाम का ऊँची आवाज़ से एलान करते हैं, और उन पर नमाज़ और ख़ुदा के ज़िक्र का बन्धन इसलिए लगाया गया है कि वह ख़ुदा की ओर से लापरवाही न बरतें और उसे भूल न जाएं जिससे उसकी याद मिट जाए।''

इस हदीस में साफ़ तौर से नमाज़ को रसूल (स0) की शिक्षा और रसूल (स0) के ज़िक्र, ध्यान को बाक़ी रखने का भी ज़रिया बताया गया है।

बेशक ये ताज्जुब है कि इस नित याद दिलाने के साथ मुसलमान ख़ुद नमाज़ के बारे में रसूल (स0) की शिक्षा को कैसे भूल गए जिसकी वजह से ये मतभेद पैदा हो गया कि नमाज़ का सही तरीक़ा क्या था, रसूल (स0) हाथ सीने पर रखते थे या सीने के नीचे या पेट के नीचे या हाथ खोल कर पढ़ते थे? मालूम होता है कि ख़ुदा ये चाहता था कि रसूल (स0)की याद एक तरह से बाक़ी रखी जाए मगर मुसलमानों में कुछ घुसपैठिये लोग ऐसेआ आगए थे जो जान बूझ कर रसूल (स0) की शिक्षा को धुधंला कर देना चाहते थे लेकिन उन लोगों ने इस सिलसिले में जितनी भी कोशिश की हो, फिर भी वह मुसलमानों से अस्ल नमाज़ को नहीं मिटा सके, और जब तक नमाज़ दुनिया में बाक़ी है, रसूल (स0) की याद भी उसके साथ बाक़ी है।

uekt +dk oDr

नमाज़ धर्म के उसूल और मज़हब के आधार की याद बाक़ी रखने के लिए है, इसके लिए ऐसे वक़्त का चुनाव किया गया है जिस वक़्त दिमाग़ दुनिया की खींचतानी से कुछ हद तक अलग होता है।

ज़ाहिर है कि ऐसे समय जब शोर हड़बोंग हो रहा हो उस वक़्त अगर आप किसी से कोई बात कहिए तो शायद ही वह उसको याद रहे, लेकिन ऐसे समय जब एकाई हो, आप हों और वह हो तब कुछ कहिए तो उसके दिमाग़ में वह बात बैठ जाएगी और वह उसे ज़्यादातर नहीं भूलेगा।

अब देखिए एक तरफ़ सुबह की नमाज़ का वक़्त ये वह मौक़ा है जब दुनिया में सन्नाटा है, दुनिया वाले बेहोश सो रहे हैं और पूरी रात मौज व मस्ती में बिताने वाले भी निंदया से हैं उस वक़्त ख़ुदा का बन्दा मुसल्ले पर आकर अपने

ख़ुदा को याद करता है। दूसरी ओर इशा की नमाज़, इसमें सभी नमाज़ों के उसूल के ख़िलाफ़ इसमें जल्दी के बजाए देर करने को ज़्यादा अच्छा ठहराया गया है, मालूम होता है कि जितना सोने के वक़्त से पास हो उतना अच्छा है।

मतलब ये है कि दुनिया में शान्ति छा जाए, इन्सान चैन की नींद की ओर जाने से पहले अपने पैदा करने वाले को याद कर ले।

आज कल की मेडिकल रिसर्च भी यही बताती है कि सोने से पहले और सो के उठ कर जिस ध्यान को दिमाग़ में बनाया जाए वह दिमाग़ में गहराई से बैठ जाता है। इसलिए सुबह की नमाज़ और रात की नमाज़ (इशा) के लिए यही दो वक़्त चुने गए हैं। अब रह गयीं बीच के वक़्त की नमाज़ें इसके लिए दोपहर का वक़्त रखा गया है, जिस वक़्त दिन के हिस्सों में सबसे ज़्यादा ठहराव होता है, 'सूरज निकलने के बाद और डूबने से पहले' यानि सुबह और तीसरे पहर (शाम से पहले का वक़्त) के वक़्त दुनिया की चहल पहल और रौनक़ के बीच दोपहर का वक़्त एक हद तक सन्नाटे का होता है, उसमें ज़ोहर और अस्र की नमाज़ रखी गयी है।

सूरज डूबने का वक़्त, दिन और रात के बीच का वक़्त है, जब नेचर में एक ख़ास चैन और ठहराव होता है जबकि दरिया की धाराएं भी ठहरी हुई, हवा ठहरी ठहरी, चिड़िया भी चुप चुप होती है उस वक़्त एक नमाज़ रख दी गयी, ये इसी लिए है कि सिरजनहार की याद इन्सान के दिल–दिमाग़ पर असर कर सके और उसे अपने बन्दे/दास होने और भक्ति का तगड़ा एहसास पैदा हो।

फिर देखिए जिस तरह इन्सान के शरीर के लिए कसरतें होती है, कसरत को देखिए तो उसमें कोई 'एक' हिस्सा ख़ास असर और फ़ायदा का नहीं होता, मगर बार–बार एक काम के करने से जिस्म पर असर डालती है, वह चाहे मामूली सी हल्की कुश्ती या टहलना ही क्यों न हो। हर इन्सान जानता है कि ये शरीर की हेल्थ (Health) के लिए फ़ायदे वाला है और उसका असर जिस्म पर पड़ता है, मगर उसका 'एक'–'एक' क़दम वह तो कुछ भी नहीं है, एक क़दम की तो कोई हैसियत ही नहीं है मगर यही एक–एक क़दम जब मिल जाते हैं और पड़ते हैं तो कसरत (Exercise) का रूप अपना लेते हैं और उससे इन्सान के जिस्म की तरबियत (Physical Training) होती है।

इसी तरह रूह और चाल चलन क़ी तरबियत है, मुम्किन है कि आप एक बार किसी के लिए अपनी नींद को उचाट कर दें लेकिन उसका कोई असर नहीं होगा बल्कि हो सकता है कि आपके मन पर इसका ख़राब असर पड़े, लेकिन अगर आप बराबर दूसरों के लिए अपनी नींद को ख़राब करते हों और कोई शिकायत भी न करें तो आपके मन पर ईसार (परित्याग/दूसरों के लिए कुर्बानी) और दूसरों की सेवा की वह शक्ति पैदा हो जाएगी जो हर एक इन्सान में नहीं पायी जाती।

ख़ुदा की इबादत, (भक्ति) तक़वा (संयम) और परहेज़गारी और मज़हबी हैसियत से इन्सान के हर कमाल विकास का राज़, मन की चाहतों का मुक़ाबला करना है। इसी को मन का जेहाद (संग्राम) कहा गया है और इसी के लिए शायर ने कहा है–

''बड़े मूज़ी को मारा, नफ़्से अम्मारा को गर मारा''

(बड़े घातक को मारा अगर आशाओं वाले मन को मारा।)

ये नमाज़ सचमुच मन की चाहतों से मुक़ाबला करने की एक कसरत है। वह सुबह का सुहाना वक़्त, वह वक़्त जब सुबह की ठंडी हवा के झोंके थपक–थपक कर सुलाना चाहते हैं, जब नर्म बिस्तर और गर्म तकिया लेटे रहने का न्योता दे रहा है जिसमें अपने रंग वालों की टोली सो रहने को रिझा रही है, क्यों कि पूरी दुनिया वाले और मौज मस्ती वाले सब मीठी नींद ले रहें हैं। और याद रखिए कि जागने वालों में जागना कठिन नहीं होता, मगर सोते हुए जमघटे में जागना

बहुत कठिन है, उस समय ख़ुदा का बन्दा बिस्तर को छोड़कर खड़ा हो जाता है। अगर जाड़े का मौसम है तो ठण्डे पानी से वज़ू करता है और मेहराब (पूजा स्थली) में आकर अपने ख़ुदा की इबादत भक्ति में व्यस्त हो जाता है और ख़ुदा की याद में डूब जाता है। अगर इन्सान इसमें पूरे तौर पर जमा रहे तो क्या ये अपने फ़र्ज़ के पहचानने की कोई आम प्रकार है?

नमाज़ ख़त्म हुई, अब इन्सान को दुनिया के अपने कामों में लग जाना चाहिए, क्यों कि दिन बनाया गया है, रोज़ी–रोटी कमाने के लिए।

ख़ुदा खुद कह रहा है कि :–

"हमने रात और दिन को इसलिए बनाया है कि इसमें चैन और आराम पाओ और इससे फ़ायदा उठाओ।" क़ुर्आन की तफ़सीर बयान करने वालों से पूछिए तो वह बतायेगें कि " फ़ायदा उठाने" का मतलब "रोज़ी रोटी कमाना" है।

वे लोग जो सुबह की नमाज़ के लिए उठने के आदी नहीं उनके दिन का बहुत सा हिस्सा भी सोने की भेंट होकर बेकार चला जाता है। मगर सुबह की नमाज़ की आदत दिन के किसी हिस्से को बेकार नहीं जाने देती। अब जाइए अपने रिज़्क की तलाश कीजिए, इसमें कोई हर्ज नहीं है। इस वक़्त को नाफ़ले की नमाज़ तक के लिये मकरूह बताया गया है।

दोपहर भर के काम के बाद मज़दूर भी थोड़ी देर की छुट्टी ले लेते हैं, दुकानदार दुकानों पर ही सही कुछ देर आराम के लिए लेट जाते है। अब बस नहीं दिल चाहता है कि खाना खाया है तो सो रहें, आराम कर लें, इस वक़्त ज़ोहर (ज़ुहर) की नमाज़ रख दी गयी, सोना है तो बाद में सो लेना लेकिन अगर एहसास हो कि हम अपने पैदा करने वाले के दास और भक्त हैं, तो ज़रा बारगाह में हाज़िर होकर चार रकअत नमाज़ पढ़ते जाओ, ये ज़ुहर की नमाज़ है, इसके बाद थोड़ी देर आराम कर लीजीए।' नाफ़िला के लेहाज़ से अस्र का वक़्त हटा कर रखा गया है और नाफ़िला का वक़्त इतना ज़्यादा रखा गया है कि उतनी देर में कुछ आराम भी किया जा सकता है और दिल चाहे तो नाफ़िला भी पढ़ी जा सकती है, फिर अब काम का वक़्त आ रहा है, बिक्री का वक़्त है, जल्दी है कि जाएं और सौदा बेचना शुरू कर दें। फ़र्ज़ (कर्त्तव्य) का एहसास कहता है कि नहीं अभी चार रकअत अस्र की नमाज़ और पढ़ें , फिर जाके अपने काम में लगें। लीजिए इसके बाद दिन ख़त्म हुआ और रात आ रही है। बाज़ार की चहल पहल अभी भी भरपूर थीं और फिर रात को चिराग़ों, बल्बों की रौशनी भी जवानी पर आ जाएगी। एक पल जो चिराग़ या बल्ब जलने के वक़्त का है उसे बेकार न जाने दो। मग़रिब की नमाज़ पढ़ लो। अब दुकान बढ़ा दी गयी है, दिन भर का थका–मांदा इन्सान घर आया है, हो सकता है खाना भी खा चुका हो, अब तो जम्हाईयाँ भी आ रही हैं और दिल चाहता है कि कोई काम न करें और बस सो रहें। मगर क़ानून कहता है कि अभी इशा की नमाज़ बाक़ी है। चार रकअत नमाज़ पढ़ो जिस तरह दिल चाहे, फिर आराम की नींद सो जाओ। ख़ुदा का बन्दा खड़ा होता है, चार रकअत नमाज़ पढ़ता है, उसके बाद बिस्तर पर जाता है।

ऐसा लगता है जैसे दुनिया के काम काज पर ख़ुदा की याद इलाही के पहरे बिठा दिए गए हैं। हर बार काम शुरू करने से पहले नमाज़, काम शुरू करने के बाद नमाज़, सो के उठने के बाद नमाज़, सोने से पहले नमाज़ और जो अपने दुनिया के काम काज के साथ इन कर्त्तव्यों को ठीक ठीक निबाहता रहे वह एक कामयाब बन्दा है और उसे ख़ुदा की तरफ़ से लागू किए गए कर्त्तव्य को निबाहने में अपने जी पर कन्ट्रोल पा गया है, जिसके नतीजे में बहुत से गुनाहों के छोड़ने में वह सफ़ल हो सकता है।

ये नमाज़ का नतीजा है, और इसीलिए कहा गया है–" बेशक नमाज़ बुराई और बेकार की बातों से बचाती है।" ¼tkjh--------------½

इस्लाम धर्म शास्त्र

y§kd %जनाब सैय्यद लियाक़त हुसैन हिन्दी बनारसी

vuqokn %जनाब सैय्यद जाफ़र असर नक़वी साहब जायसी

क़िस्त : 3

d;ker ¼çy;½dk o.kZu

अर्थात एक दिन ऐसा आएगा जब सब के सब मर जाएंगे ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ भी शेष न रहेगा। फिर ईश्वर मिट्टी से बने शरीरों को उसी मिट्टी से जन्म देगा। और प्राणों को उनमें प्रवेश करके जीवित करेगा और उनके कर्मों की गमना के पश्चात धार्मिक मोमिनों को स्वर्ग तथा कुकर्मियों को नरक में स्थान दिया जाएगा।

eR;qdk o.kZu

सलमान ने कहा, ''यह बताओ कि तुम्हारी मृत्यु किस प्रकार हुई और क्या कष्ट हुआ?'' मृतक ने उत्तर दिया, ''हे सलमान! कुछ न पूछ! ईश्वर की शपथ खाकर कहता हूं यदि कोई व्यक्ति मेरे समस्त शरीर को कैंची से काट कर कण–कण अलग करता और हड्डियों से मास को अलग करता तो भी उतना कष्ट न होता जिनता मृत्यु का कष्ट है। हे सलमान! मैं संसार में सर्वदा अच्छे कर्म किया करता था। सदैव नमाज़ पढ़ता क़ुर्आन का अध्ययन करता। माता के साथ सदव्यवहार करता ओर पवित्र धन से अपना जीवन व्यतीत करता था सहसा रोगग्रस्त हुआ और मेरी आयु का अन्तिम क्षण आ पंहुचा। उस समय एक विशाल और भयानक व्यक्ति मेरे सम्मुख हवा पर खड़ा हो गया और वहीं से मेरे नेत्रों की ओर संकेत किया नेत्रों का प्रकाश जाता रहा, कानों की ओर संकेत किया तो कान बहिरे हो गये, जिहवा की तरफ इशारा किया तो वह बन्द हो गई और मैं मूक हो गया। मैंने पूछा कि तू कौन है कि मेरे साथ ऐसा दुर्व्यवहार किया उसने उत्तर दिया मै यम दूत हूं। अब तेरे जीवन की अवधि समाप्त हो गई.......... फिर नाक के द्वारा मेरे प्राणों का अपहरण कर लिया जिसका कष्ट मुझे अब तक नहीं भूला है।''

dczdsi'zukÙkj

क़ब्र के भीतर एक भयानक यम दूत जिसका नाम 'मुनकिर' है अग्नि गदा लिए मेरे पास आया और कहने लगा बतला तेरा ईश्वर कौन है? पैग़म्बर और इमाम तेरे कौन हैं? तू किस धर्म का अनुयायी था? यह सुनकर मैं अत्यन्त भयभीत हुआ। मेरा रोम–रोम कांपने लगा। इतने में ईश्वर की कृपा से हृदय स्थिर हुआ तो मैंने उत्तर दिया कि ईश्वर मेरा पालने वाला 'अल्लाह' है। मुहम्मद साहब मेरे रसूल हैं। हज़रत अली अ0 तथा उनके मासूम समस्त पुत्र मेरे इमाम तथा नेता हैं और इस्लाम मेरा सच्चा दीन है और क़ुर्आन मेरा धार्मिक ग्रन्थ है। फिर दूसरे दूत ने जिसका नाम नक़ीर था भयानक स्वर से मेरे कर्म तथा विश्वास से सम्बन्धित प्रश्न पूछे। ईश्वर की कृपा से मैंने उसका भी उत्तर दिया। 'स्वर्ग' सत्य है 'नरक' अवश्य है, सिरात का पुल अवश्य है और कर्मों की नाप तोल (मीज़ान) अवश्य है। क़ब्र में 'मुनकिर' तथा नकीर द्वारा प्रश्न किया जाना सत्य है। निस्सन्देह प्रलय अवश्य होगी। प्रत्येक मृतक व्यक्ति जो क़ब्र में हैं ईश्वर उन्हें अवश्य उठा कर खड़ा करेगा। फिर मुझे क़ब्र में बुला कर स्वर्ग की खिड़की खोल दी गई।

eyd&my&ekSr ¼;e nwr½

प्राण अपहरण करने का कार्य हज़रत

इजराईल फरिश्ते के अधीन है और उनके सहायक फ़रिश्ते भी हैं जो उनके आदेशानुसार प्राणों का हरण करके उनको अर्पित कर देते हैं। सर्व प्रथम पृथ्वी के निवासी मरेंगे फिर आकाश वाले मरेंगे। फिर जिबरईल, मीकाईल, फ़रिश्ते एंव अन्य आकाश के निवासी मरेंगे। मलक–उल–मौत शेष रहेंगे फिर ईश्वर उनको भी मरने की आज्ञा देगा और वे भी मर जाएंगे। फिर ईश्वर पुकारेगा कि वे लोग कहां हैं जो मुझे शारीरिक रूप में मानते थे और वे लोग कहां हैं जो मेरे साथ दूसरे ईश्वर की भी पूजा करते थे।

cjt [k dkl e;

उस समय को कहते हैं जो मृत्यु काल से लेकर क़यामत तक का है मध्यकालीन समय है। मुनकिर व नकीर के प्रश्न के पश्चात कुछ लोग आराम से रहेंगे और कुछ दुख एंव कष्ट से पीड़ित होंगे 'ज़ग़ता व फिशारे क़ब्र इसी शरीर के साथ है और बरज़ख़ काल की समस्त घटनाएं प्राण से सम्बन्धित हैं।

t *+k ,a fQ'+kkjsd Ckz

जिस प्रकार कपड़े को पानी में भिगो कर फिर उसको निचोड़ कर झटका देते हैं उसी प्रकार पृथ्वी क़ब्र में मुर्दे के शरीर को निचोड़ कर झटका देगी। इसी को ज़ग़ता एंव फिशारे क़ब्र कहते हैं।

l jv ¼Hkkis ½dh ?ofu l si gy sd ;+ker dsfpUg

(1) याजूज, माजूज (प्रसिद्ध कपटी पापी) का बाहर निकलना (2) दावत–उल–अर्ज़ का प्रकट होना (3) सूर्य का पश्चिम से उदय होना। (4) एक ऐसे धुएं का (धूम्र) का निकलना जो 40 दिन तक रहेगा और सब लोगों का घेराव कर लेगा। यह पापियों को अधिक कष्ट देगा।

uQ[k&, &l jv ¼Hkkis wd h /ofu½

ईश्वर ने हज़रत इसराफ़ील फ़रिश्ते के साथ ही 'सूर' (एक प्रकार का भोपू) को भी जन्म दिया जिसका एक किनारा पूर्व दिशा तथा दूसरा किनारा पश्चिम दिशा में है। हज़रत इसराफ़ील उस सूर को मुख से लगाए खड़े हुए हैं। जब ईश्वर का आदेश होगा तो वे सूर फूकेंगे इसी को नफ़ख़–ए–सूर कहते हैं। सूर दो बार फूंका जाएगा। इसका स्वर बड़ा भयानक होगा।

iFke /ofu %& प्रथम ध्वनि में पृथ्वी तथा आकाश के समस्त प्राणी एक साथ मर जाएंगे।

f}rh; /ofu %& जब सूर दूसरी बार फूंका जाएगा तो लोग जीवित होकर अपनी क़ब्रों से तीव्र गति के साथ उठेंगे और आकाश की ओर उस स्थान की ओर जाएंगे जहां जाने का आदेश ईश्वर की ओर से प्राप्त होगा।

d ;+ker ¼iy ;½l si wZ?kVusokyh ?kVuk,a

(1) आकाश पत्रों की भांति लपेटा जाएगा। (2) आकाश फट जाएगा और विभिन्न रंगों में दिखाई देगा तथा अपने स्थान से दूर दृष्टिगोचर होगा। (3) तारा गण की ज्योति नष्ट हो जाएगी। (4) सूर्य तथा चन्द्रमा का प्रकाश जाता रहेगा और दोनों एक स्थान पर एकत्रित हो जाएंगे। (5) समस्त पर्वत धुनी हुई रूई की भांति दृष्टिगोचर हो जाएंगे। उनका कण–कण वायु मण्डल में उड़ेगा और वे पृथ्वी की भांति समतल हो जाएंगे। (6) पृथ्वी समतल हो जाएगी। ऊंचाई नीचाई शेष रहेगी।

क़यामत के दिन ईश्वर अपने दासों को एक क्षण मात्र मे एक स्थान पर एकत्र करेगा फिर समस्त आकाशों को लाकर उनके चहु ओर घेराव डाल देगा। तत्पश्चात एक बादल फ़रिश्तों के साथ लाकर लोगों को घेर लेगा।

i'kqvksa dk eg'kjv gksuk

अर्थात पशुओं को एकत्र करके उनसे पूछ–ताछ की जाएगी और उन अत्याचारों का भुगतान किया जाएगा जो मनुष्यों द्वारा उन पर किया गया था।

eyd] ftUu rFkk 'kSrkuksa dk eg'kjv gksuk

अर्थात फ़रिश्ते, जिन्नात तथा राक्षस रूपी जिन्नात ऐव शैतान भी एकत्रित होंगे और पूछ–ताछ की जाएगी। फ़रिश्ते तो स्वर्ग में प्रवेश करेंगे

परन्तु शैतान नरक में जाएंगे और जिन्नातों में जो मोमिन होंगे वे पुण्य भागी होकर स्वर्ग में जाएंगे कुछ 'आराफ़' (वह स्थान है जो एक टीले के समान नरक तथा स्वर्ग के मध्य में स्थित है– संशोधक) में रहेंगे।

ckyd ka,oa ikxyksadk eg'kj gksuk

बालक और पागल भी एकत्र किये जाएंगे और उनसे भी पूछ–ताछ होगी।

ehtku ¼eki d½

मीज़ान निस्सन्देह है अर्थ में विभिन्नता है उस मीज़ान (तराजू) से ही समस्त कर्म नापे तौले जाएंगें।

x.kuk ,oa fgl kc

ईश्वर तुरन्त गणना करने वाला और सभी गणितज्ञों से तेज है। वह एक क्षण में सृष्टि का हिसाब करता है।

fl jkr

यह एक प्रकार का पुल है जो नरक के ऊपर बना है यह बाल से अधिक बारीक तथा तलवार की धार से अधिक तेज़ है और अग्नि से अधिक गर्म है। जब तक इस पुल को पार न करें कोई स्वर्ग में नहीं जाएगा मोमिन तथा सच्चे ईमान वाले उसे विधुत की भांति तीव्र गति से पार कर जाएंगे। कुछ रूकावट तथा कठिनाई से पार करेंगे परन्तु मुक्ति पाएंगे। कुछ इस पर से नरक में गिरंगे।

LoxZ dk l âf{kr o.kZu

स्वर्ग तथा नरक का जन्म हो चुका है। हज़रत मुहम्मद साहब मेराज की रात्रि में स्वर्ग में पधारे थे और नरक का निरीक्षण किया था।

LoxZ ds xq.k& (1) सदैव जीवित रहने का स्थान है वहां मृत्यु नहीं है। (2) वहां किसी प्रकार का भय, शंका, चिन्ता, दुख तथा रोग इन्यादि नहीं होता कोई बूढ़ा, अन्धा, बहिरा इत्यादि नहीं होता। (3) नेत्र जिस वस्तु से स्वाद पाए मनुष्य को प्राप्त होता है। (4) स्वर्ग से कभी बाहर नहीं निकलते वरन् सदैव वहीं रहते हैं। (5) वह पवित्र तथा सज्जन व्यक्तियों का स्थान है। (6) वहां छल, कपट, बैर ईर्ष्या तथा मार पीट इत्यादि नहीं हैं। (7) प्रत्येक व्यक्ति उस पर सन्तोष करता है जो वस्तु ईश्वर ने उसे प्रदान की है। वह उसी में प्रसन्न रहता हैं और दूसरे व्यक्तियों के पद की इच्छा नहीं करता। (8) स्वर्ग वासियों को लघु शंका, दीर्घ शंका नहीं। उनमें किसी प्रकार की मलिच्छता तथा दुर्गन्ध नहीं पायी जाती अपितु उनका पसीना सुगन्धित इत्र की भांति शरीर से बाहर निकलता है। (9) उनकी स्त्रियों को जो 'हूरों' (स्वर्ग बाला) तथा मनुष्यों में से होंगीमासिक धर्म नहीं आता। प्रजनन की गन्दगी नहीं होती तथा उनमें शंका, छल, कपट, बैर तथा दुराचरण नहीं होता। (10) स्वर्ग वासी उन स्वर्णमयी कुर्सियों पर जो कलाबत्तू से बनी तथा सच्ची मोतियों और जवाहिरात से अलंकृत होंगी तकिये लगाए आमने सामने बैठे होंगे। (11) स्वर्ग की नहरों के शीतल तथा पवित्र जल को बिना उसमें किसी प्रकार का गड्ढा किये जितना चाहे ऊँचा किया जा सकता है और वे समस्त घरों तथा वृक्षों के नीचे से बहती हैं। (12) स्वर्ग की चारदीवारी में लगी ईंटे सोना, चाँदी तथा याकूत की हैं और उनके निर्माण में मिट्टी के स्थान पर कस्तूरी का प्रयोग किया गया है। (13) वहां सर्वदा प्रकाश रहता है। अन्धकार नहीं होता। (14) स्वर्ग के चाकरों के हाथ में सोना, चांदी तथा जवाहिरात के प्याले होंगे जिसमें पीने के हेतु सुन्दर द्रव भरा होगा। (15) जिस पक्षी के मांस के कबाब की इच्छा होगी उपस्थित हो जाएगा। (16) बैकुण्ठ के कमरे सुन्दर पुष्पों तथा हरियाली से सुसज्जित होंगे।

rwck& यह एक प्रकार का वृक्ष है जो स्वर्ग में है जिसकी जड़ मुहम्मद साहब के घर में है और उसकी शाखाएं प्रत्येक मोमिन के घर में हैं। वह मोमिन जिस वस्तु की इच्छा करता है वह शाखा उसके लिए वह वस्तु उपस्थिति करती है। उसका क्षेत्रफल इतना विस्तृत है कि यदि एक

तेज़ दौड़ने वाला घोड़ा सौ वर्ष तक दौड़े तो उसकी छाया से बाहर नहीं निकलेगा।

ujd rFkk vkjkQ +dk lafkIr o.kZu

नरक के गुणः—(1) उसकी गहराई अत्यधिक है। बहुत ही अधिक गर्मी है। (2) वहां नित्य नये दण्ड दिये जाएंगे। (3) हथौड़े और गदा लोहे का है। (4) उसका अज़ाब (बुरे कर्मों का दण्ड) कम नहीं होता। (5) नरक निवासियों को मृत्यु नहीं है। वे उसमें सदा जलते रहेंगे। (6) वह ऐसा घर है जहां दया, क्षमा तथा कृपा नहीं है। (7) नरक निवासियों की प्रार्थना स्वीकार नहीं होती। (8) अग्नि पर सर्पों तथा बिच्छुओं की अधिकता है। (9) वहां का जल पिघले हुए ताम्र, विष तथा रक्त की भांति है। (10) नरक की अग्नि का ईन्धन, काफ़िर तथा पापी व्यक्ति तथा गर्म किए हुए पाषाण हैं। (11) नरक के घरों से अग्नि की ज्वाला तथा चिंगारी निकलती है। (12) नरक के कूप में एक ऐसा विषैला सर्प है कि उस कूप के निवासी उसकी दुर्गन्ध तथा विष से पनाह मांगते हैं।

ujd dsrcdkr ¼[k.M½& (1) नरक (2) सईर (3) सक़र (4) जहीम (5) नती (6) हतमा (7) हरविया। कुछ विद्वानों का कथन है कि नरक के सात द्वार हैं वही दरका कहलाते हैं।

iEke njdk%& एकेश्वरवादियों का है कि अपने कर्मों के अनुसार जो संसार में किये थे दण्डित होंगे फिर उनको बाहर निकाला जाएगा।

f}rh; njdk%& यहुदियों का है।

f=rh; njdk%& नसारा (ईसाइयों का निवास स्थान)

prqFkZ njdk%& साईबीन का स्थान है मजूसियों (पारसियों का स्थान है।)

"k"Ve h; njdk%& मुशरिकीन (ईश्वर को एक न मानने वाले) अर्थात मूर्ति पूजा करने वालों का स्थान है।

lIre h; njdk%& यह सब से नीचे है और मुनाफ़िकों (दिखावे का ईमान लाकर पलट जाने वाले) के लिए है। और कहा कि जो लोग काफ़िर हुए और लोगों को ईश्वर के मार्ग से पथभ्रष्ट किया है हमने उनके लिए अज़ाब (दण्ड) अधिक इस कारण किया कि वे झगड़ा फैलाते थे कुछ लोगों का कथन है कि अग्नि पर ऐसे सर्पों तथा बिच्छुओं की अधिकता है जिनके डंक वृक्षों की भांति ऊचे हैं। और कहा कि नरक पापियों के मार्ग की ओर है। धर्मावलम्बी विद्रोही तथा काफ़िरों का ठिकाना है। वे इसमें अनेकों 'हक़ब' तक रहेंगे। कुछ का कथन है कि 43 हक़ब हैं। प्रत्येक हक़ब 70 ख़रीफ़ का है। प्रत्येक ख़रीफ़ 700 वर्ष का है। प्रत्येक वर्ष 360 दिन का है तथा प्रत्येक दिन 1000 वर्ष का है। यदि नरक निवासियों का एक वस्त्र आकाश तथा पृथ्वी के मध्य लटकायें तो उसकी दुर्गन्ध से समस्त संसारी मर जाएंगे।

Qyd %& नरक में दर्रा है जिसमें 70 हज़ार कोठरियां हैं प्रत्येक कोठरी में 70 हज़ार काले सर्प हैं। प्रत्येक सर्प के उदर में 70 हज़ार घड़े विष के हैं। समस्त नरक वासी उस पर से होकर जाएंगे।

vkjkQ %& स्वर्ग तथा नरक के मध्य एक हिसार (गढ़) है उसमें एक द्वार है उस द्वार का बाहरी भाग 'कृपा' है जो स्वर्ग की ओर होगा और उसका भीतरी भाग 'अज़ाब' (दण्ड) है जो नरक की ओर होगा। ईश्वर आराफ़ में उन लोगों को रखता है जो अपने कर्म के कारण विशेष पुण्य के भागी नहीं है और न उन्होंने ऐसा पाप ही किया हो कि नरक भागी बनें।

xqgku&,&dchjk ¼nh?kZ iki½

दीर्घ पाप वे पाप हैं जिसके लिए धर्म—शास्त्र ने कोइ दण्ड निर्धारित किया हो या अज़ाब की धमकी दी गई हो। इन पापों की सूची इस प्रकार है:—

(1) अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को उसका साझीदार मानना (यह महान पाप है) (2) किसी मोमिन (धर्मी) की बिना कारण हत्या करना

(3) विवाहित तथा अन्य स्त्रियों पर व्यभिचार तथा भ्रष्टाचार का आरोप लगाना। (4) अनाथ बालकों के धन को अत्याचार से लेकर अपने तथा दूसरों के व्यय में लाना। (5) अन्य तथा विवाहित स्त्रियों एंव अपनी माता बहिनों से बलात्कार करना। (6) जिहाद (धार्मिक युद्ध/संग्राम) अनिवार्य युद्ध क्षेत्र से भाग जाना। (7) माता पिता की आज्ञा का पालन न करना तथा द्रोही होना। (8) ब्याज लेना व देना (9) जादू करना। (10) झूठी शपथ खाना। (11) मदिरा पान करना। (12) जुवा खेलना। (13) मुहम्मद साहब तथा अन्य इमामों को वचन देकर वचन तोड़ देना। (14) हरम–ए–मक्का में ऐसे कार्य करना जिन पर अल्लाह ने प्रतिबन्ध लगाया है। (15) ईश्वर की कृपा से निराश होना। (16) ईश्वर के अज़ाब। (दण्ड) से निर्भय होना। (17) क्रय–विक्रय में अधिक लेना तथा कम देना। (18) गाना गायन करना अथवा सुनना, बाजा (संगीत) बजाना अथवा सुनना एंव नृत्य देखना अथवा नृत्य करना। (19) एग़लाम (बालकों से अप्राकृतिक व्यवहार–लौंडे बाज़ी) करना इसका दण्ड बहुत कड़ा है। (20) चोरी करना। (21) पीठ पीछे धर्मियों की शिकायत करना। (22) अनिवार्य कार्यों को त्याग देना जो क़ुर्आन तथा हदीस से सिद्ध हों। (23) अनावश्यक व्यय करना। (24) इमामों से सम्बन्धित (झूठी) हदीसों (कथन) का वर्णन करना अपितु हर प्रकार का झूठ बोलना (25) मृतक पशुओं एंव सुअर का मांस खाना तथा ऐसे पशुओं का मांसाहर करना जो धर्म के नियमों के अनुसार ज़िबह न किया गया हो या जिन पशुओं का मास खाना हराम हो। (26) सत्य गवाही को छिपाना। (27) धन को अनुचित रूप से व्यय करना। (28) काफ़िरों के देश तथा वन को तयाग कर इस्लामी देश में आकर रहे और फिर उसी स्थान पर जाकर निवास करे। (29) लघु पापों को निरन्तर करते रहना। (30) छोटे पापों को तुक्ष्छ समझना। (31) मोमिनों पर अत्याचार करना। (32) खेल कूद में लग्न रहना। (33) घूस लेना। (34) अत्याचारियों के अत्याचार में सहयोगी बनना। (35) लोगों का धन चुराना। (36) लोगों से वचन भंग होना। (37) गौत्र वालों तथा कुटुम्बियों के साथ सहनशील न होना। (38) भविष्य वाणी करना। (39) मादक पदार्थ खाना। (40) किसी पर दोष लगाना। (41) साधारण जल पर प्रतिरोध लगाना। (42) मूत्र की गन्दगी से न बचना। (43) ऐसे कार्य करना जिसके कारण लोग उसके माता पिता को अपशब्द कहें। (44) ऐसी वसीयत करे जिस में अधिकारियों का अधिकार मारा जाए। (45) ऐश्वरीय कर्मो से असन्तुष्ट होना। (46) ऐश्वरीय भाग पर वाद विवाद करना। (47) घमण्ड करना। (48) ईर्ष्या करना। (49) मोमिन से बैर रखना तथा उनको धमकाना। (50) आलोचना करना। (51) किसी मोमिन का बिना किसी कारण शरीर का कोई भाग काटना। (52) हराम (अनुचित निषिद्ध) कार्यों में सहयोग देना। (53) बुरी बातों से मना न करना। (54) वचन देकर पूर्ण न करना। (55) मोमिनों को धिक्कारना। (56) मोमिनों की ओर से शंका रखना। (57) मोमिनों को बिना कारण बुरा भला कहना। (58) मोमिनों के गुप्त गुणों को टोह लगाना। (59) मोमिनों को हीन समझना। (60) दास तथा दासियों को अनावश्यक दण्ड देना। (61) मुसलमानों का मार्ग रोकना। (62) अपने सन्तान की देख–रेख न करना। (63) अनुचित कार्यों में सहायक होना। (64) धार्मिक कार्यों में नूतनता उत्पन्न करना। (65) भले कार्यों को करते हुए भी बुरे कार्यों के करने से रोक थाम न करना। (66) मदपान करने वालों के साथ उठना बैठना (67) धर्म में नूतनता उत्पन्न करने वालों के साथ उठना बैठना। (68) असत्य गवाही देना। (69) समर्थ होते हुए लोगों को उनका 'हक़' (अधिकार) न देना (70) जिहवा पर अनुचित उपशब्द लाना। (71) रक्त पीना। (72) अनिवार्य ज़कात का न देना। (73) दूसरे वंश में प्रवेश करना तथा फिर बाहर आ जाना। ¼ckdh is u0 16 ij------½

ख़बर नामा

सहाबि-ए-रसूल हज़रत हुज्र बिन अदी की क़ब्र की बेहुरमती पर एहतेजाज

सहाबि-ए-रसूल स० जनाबे हुज्र बिन अदी की क़ब्र की बेहुरमती और लाश को निकालकर ना मालूम मक़ाम पर ले जाने और जारडन में सहाबी व बरादरे रसूल स. जनाबे जाफ़रे तैय्यार अ. के रौज़े में आग लगाये जाने के ख़िलाफ़ 10 मई 2013 को बादे नमाज़े जुमा मजलिसे उलमा-ए-हिन्द की जानिब से एक एहतेजाजी जुलूस आसिफ़ी मस्जिद से छोटे इमामबाड़े तक निकाला गया। इस मौक़े पर मजलिसे उलमा-ए-हिन्द के जनरल सिक्रेटरी कायदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद नक़वी ने लोगों को ख़िताब करते हुए कहा कि ''पहले दहशत गर्द कहते थे कि हम इस्लाम के दुश्मनों के ख़िलाफ महाज़ आराई कर रहे हैं और इस्लाम दुश्मन ताक़तों को ख़त्म करने के लिए जिद्दो जोहद कर रहे हैं उनके इस पुरफ़रेब नारे के गरदाब में हज़ारों नौजवान फंसते चले गये लेकिन अब उन दहशतगर्दों के मन्सूबे और उनका मज़हब Expose हो गया है। वो अफ़राद जो मुसलमान होने का नारा लगाते हैं लेकिन असहाबे रसूल स. की क़ब्रों की तौहीन करने में फ़ख्र महसूस करते हैं उनका अल्लाह और रसूल स. से कोई तअल्लुक़ नहीं है बल्कि ये लोग इस्लाम का लबादा ओढ़कर इस्लाम के ख़िलाफ़ ही साज़िशें करने में मसरूफ़ हैं। यही वो बदअक़्ल लोग हैं जो इस्तेमारी व सहयूनी ताक़तों का मोहरा बनते रहे हैं क्यों कि उनके मिज़ाज में ज़रा भी इस्लामी आईन की इलक नहीं है बल्कि ये आज भी अरब के बद्दुओं का सा मिज़ाज रखते हैं'' मौलाना ने अपने बयान में कहा कि ''जनाबे जाफ़रे तय्यार अ. को सहाबी और बरादरे रसूल स. होने के साथ ये शरफ़ भी हासिल है कि इस्लाम की पहली हिजरत हबश की जानिब आप ही ने की थी और कई साल तक वहां तबलीग़ इस्लाम करते रहे। तारीख़ के मुताबिक़ आप फ़तहे खैबर के दिन तशरीफ़ लाए थे मुसलमानों को चाहिए कि अब बेदार हों नहीं तो वो दिन दूर नहीं कि जब ये ख़बर आएगी कि उन नाम नेहाद मुसलमानों ने रौज़-ए-रसूल स. पर हमला कर दिया। उस समय मुसलमान खुद को कभी मुआफ़ नही कर पाएंगे। मौलाना ने हुकूमते हिन्द से अपील की कि वो हिन्दुस्तान में दहशतगर्दी के बानी इस्राईल की एम्बेसी फ़ौरन बन्द करे और सऊदी अरब से अपने तअल्लुक़ात को ख़त्म करे। हिन्दुस्तान एक अमन पसन्द मुल्क है लिहाज़ा उसे ऐसे देशों के सम्पर्क में रहना शोभा नहीं देता।''

इस मौक़े पर हज़ारों की संख्या में मोमिनीन ने जुलूस में भाग लिया और इस दिन को यौमे सियाह के तौर पर मनाया गया। जुलूस में मुज़ाहेरीन काले बैनरों और काले झण्डों के साथ शरीक हुए और घण्टा घर चौराहे पर अमरीका, इस्राईल और सऊदी अरब के हुकमरानों के पुतले जलाये गये जुलूस में दीगर उलमा-ए-शहर और विद्यार्थियों ने ख़ास तौर से भाग लिया।



रोटरी क्लब के ज़ेरे एहतेमाम क़ायदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद को एवार्ड

होटल ताज में एक प्रोग्राम के दौरान रोटरी कलब के चेयरमैन मिस्टर बोब स्काट ने मजलिस उलमा-ए-हिन्द के जनरल सिक्रेटरी क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद नक़वी को पोलियो से बचने की मुहिम को कामियाबी से हमकनार करने में भरपूर तआवुन देने के लिए अवार्ड दिया। इससे पहले 2007 में भी मुस्लिम उलमा-ए-हिन्द की एक कान्फ्रेन्स यूनिसेफ़ के लिए मुनअक़्क़िद की गयी थी जिसमें पोलियो से बचने की मुहिम को कामियाब बनाने के लिए तमाम मुस्लिम उलमा-ए-हिन्द की मदद मांगी गयी थी उस मौक़े पर भी मौलाना कल्बे जवाद को मदउ किया गया था और उनसे तआवुन की अपील की गयी थी।



औक़ाफ़ की बाज़याबी के लिए क़ौम के हर आदमी का मुत्तहिद होना ज़रूरी:कल्बे जवाद

मलजिसे उलमा-ए-हिन्द के मुख्य कार्यालय स्थित इमाम बाड़ा ग़ुफ़रानमॉब में वक़्फ़ की ज़मीनों पर नाजाएज़ क़ब्ज़ों के पेशे नज़र बाद नमाज़े जुमा एक मीटिंग मुनअक़िद हुई। मजलिसे उलमा-ए-हिन्द के जनरल सिक्रेटरी क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद नक़वी ने मीटिंग को ख़िताब करते हुए कहा कि ''अगर इस वक़्त हम अपने बाक़ी मान्दा औक़ाफ़ की हिफ़ाज़त न कर सके और अपने हुक़ूक़ की बाज़याबी की जिद्दो जोहद करने में नाकामियाब रहे तो फिर शायद हम कभी कामियाब न हो सकें। उन्होंने कहा कि शर्म की बात है कि हमारे औक़ाफ़ का नाजाएज़ तरीक़े से इस्तेमाल किया जा रहा है और वक़्फ़ की ज़मीनों पर शराब की दुकानें तक खुली हुई हैं। सिब्तैनाबाद, नरही, हुसैनाबाद ट्रस्ट और ना जाने कितने औक़ाफ़ पर हुकूमत या हुकूमती अफ़सरों की साज़ बाज़ से नाजाएज़ बिल्डिंग और अपार्टमेन्ट खड़े कर दिये गये हैं हमारे बुज़ुर्ग औक़ाफ़ की सूरत में हमारे लिए इतना सरमाया छोड़ गये थे कि हमें किसी की नौकरी या किसी के सामने दस्ते सवाल फैलाने की ज़रूरत ही न पड़ती लेकिन हमने खुद अपनी बर्बादी और गुर्बत के अस्बाब पैदा किये और आज हमारी इक़्तेसादी हालत पस्ती का शिकार है। नौजवान बे रोज़गार हैं और वो जवान जिनके पास अच्छी तालीम है उनके पास तरक़्क़ी के ज़ीने तै करने के लिए वो अस्बाब मुहय्या नहीं हैं जिनकी उन्हें ज़्यादा ज़रूरत होती है। हम अगर अपने औक़ाफ़ की ज़मीनें जिद्दो जोहद करके वापस लेने में कामियाब हो जाते हैं तो ये सारी मुश्किलात आसानी से हल हो सकती हैं।'' मौलाना ने अपने ख़िताब में मज़ीद कहा कि ''अगर औक़ाफ़ की बाज़याबी की कोशिशों में क़ौम हमारा हर पैमाने पर साथ देने के लिए तैयार है तो हम इन्शाअल्लाह जल्द ही अपने हुक़ूक़ को हासिल करने की मन्सूबा बन्दी करेंगे ताकि हमारे नौजवानों के मसाएल हल हो सकें। इस सिलसिले में हम कई बार वक़्फ़ अफ़सरान को इन्तेबाह दे चुके हैं कि वो जल्द अज़ जल्द कोई ऐसी तदबीर करें कि औक़ाफ़ की ज़मीनों से नाजाएज़ क़ब्ज़ों को हटवाया जा सके जिनमें खुसूसियत के साथ सिब्तैनाबाद, नरही, हुसैनाबाद ट्रस्ट की इम्लाक शामिल हैं।''

(पेज नं० 14 का बाक़ी..............)

(74) हराम तथा अपवित्र पदार्थों का खाना। (75) रमज़ान का रोज़ा (व्रत) बिना कारण न रखना। (76) मुसलमानों को धोखा देना। (77) अपने नगर तथा कुटुम्ब के बुरे लोगों को अन्य नगर तथा कुटुम्ब के भले लोगों से भला समझना। (78) बुराई सुनना। (79) नमाज़ रोज़ा दिखाने तथा सुनाने के लिए करना।

तौबा (क्षमा याचना)

अपने किये पापों की तुरन्त क्षमा मांगना तथा भविष्य में पाप न करने की प्रतिज्ञा करना अनिवार्य है। विलम्ब करने से मनुष्य दोषी होता है। क्योंकि पाप विष के समान है जिस प्रकार विष खा लेने वाले की चिकित्सा तुरन्त करना अनिवार्य है कि मृत्यु न हो जाए। उसी प्रकार पाप करने वाले को तत्काल तौबा करना भी अनिवार्य है कि पाप उसे नष्ट न कर दे। तौबा करने में विलम्ब करना दूसरा पाप है।

कलमा

''ला इला-ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलिल्लाहि अलीयुव वलीउल्लाहि व वसीयु रसूलिल्लाहि व ख़लीफ़तुहु बिला फ़स्ल।''

अनुवादः-अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य खुदा नहीं, मुहम्मद अल्लाह के पैग़म्बर (भेजे हुए) हैं। अली अल्लाह के वली (दोस्त) हैं और रसूल खुदा के वसी (पदाधिकारी) हैं और बिला फ़स्ल (निस्सन्देह) रसूल के ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) हैं।

दुरूद

अल्लाहुम्-म स्वल्लि अला मुहम्मदि-व व आलि मुहम्मद।

अनुवादः- ए अल्लाह अपने रसूल तथा उनके पवित्र सन्तानों पर दरूद (रहमत-कृपा दृष्टि भेज/वरदान दें)

मुस्लिम

अर्थात् मुसलमान जिसने 'अल्लाह' के धर्म (इस्लाम) को मुख से स्वीकार किया। उसूले दीन पर विश्वास करके उसे स्वीकार किया।

मोमिन

अर्थात् वह जिसने अल्लाह के आदेशों का भलीभांति पालन भी किया और मुख से इस्लाम धर्म स्वीकार करके उसूल-ए-दीन तथा फ़ुरूए दीन पर सहृदय विश्वास करके उसका पालन किया।

मुसलमान की परिभाषा

''अल-मुस्लिम सलमन्नास मिन यदही व लिसानिही।'' (पुस्तकः 'जवाहिर-उल-बयान', पृष्ठ 214, मुद्रित निज़ामी प्रेस, लखनऊ (भारत)।

अनुवादः-मुसलमान वह है जिसकी जिहवा तथा हाथ से लोग सुरक्षित रहें। **(जारी..............)**